विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

मई 2026

मई माह पत्रिका

बुद्ध पूर्णिमा

शांति, करुणा और ज्ञान के प्रकाश का पर्व।

मातृ दिवस

मां के प्रेम, त्याग और समर्पण को नमन।

गर्मी से बचें!

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

हमारी गतिविधियाँ

HEALTH CHECKUP

विद्यालय में "हेल्थ चेकअप कैंप" का आयोजन किया गया। डॉक्टरों की टीम ने बच्चों की स्वास्थ्य जांच की और स्वस्थ रहने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

Health Checkup Wellness

SUMMER CAMP

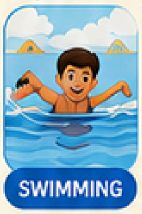

छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए समर कैंप का आयोजन किया गया। खेल, योग, कला, संगीत और रचनात्मक गतिविधियों के साथ सीखने का आनंद!

Contact Info

0120-4545608

WEBSITE: ssmnoida.in

GMAIL: ssm.noida@gmail.com

गर्मी में रखें विशेष ध्यान

- अधिक से अधिक पानी पिएं।
- हल्का और पौष्टिक भोजन करें।
- धुप में बाहर जाते समय टोपी/छाता का उपयोग करें।
- स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर

सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा

मई 2026

मासिक ई-पत्रिका, मई – 2026

ज्ञानोदय (अंक - 67)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री कृष्ण कुमार बंसल

श्री राजीव नाईक

श्री नितीश आर्य

श्री जितेन्द्र कुमार गौतम

श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेंद्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंन्दिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)

श्री दीपक कुमार

श्रीमती तरूणा सक्सेना

च0 अनू सिंह

सरस्वती शिशु मंन्दिर, नोएडा

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- विश्व पर्यावरण दिवस
- वायु शुद्धि यज्ञ
- विश्व रक्तदान दिवस
- विश्व योग दिवस
- बंकिम चंद्र जयंती
- हिंदू साम्राज्य दिवस
- क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला
- रवींद्रनाथ टैगोर जयंती
- मातृ दिवस कला एवं खेल प्रतियोगिता
- रेडक्रॉस डे
- स्वास्थ्य परीक्षण शिविर
- आचार्य-अभिभावक गोष्ठी
- अंग्रेजी संभाषण
- तरण-ताल क्रियाकलाप
- समर कैंप उद्घाटन

संपादकीय

संगीत : जीवन को सुरों से सँवारने की साधना

प्रिय भैया-बहिनों,

संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन को सुंदर, संतुलित और संस्कारित बनाने वाली एक दिव्य साधना है। भारतीय संस्कृति में संगीत का विशेष स्थान है। माँ सरस्वती की वीणा हमें ज्ञान, कला और मधुरता का संदेश देती है। मधुर स्वर मन को शांति प्रदान करते हैं, आत्मविश्वास बढ़ाते हैं तथा अनुशासन, एकाग्रता और संवेदनशीलता जैसे गुणों का विकास करते हैं।

विद्यालय में प्रार्थना, देशभक्ति गीत, समूहगान और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ केवल कार्यक्रम नहीं होते, बल्कि वे हमारे भीतर राष्ट्रप्रेम, सहयोग, आत्मविश्वास और संस्कारों के बीज बोते हैं। संगीत हमें जोड़ना सिखाता है, मन की भावनाओं को सकारात्मक दिशा देता है और जीवन में सौहार्द का संचार करता है।

प्रिय भैया-बहिनों, आप सभी प्रतिदिन संगीत का अभ्यास करें, मधुर गीतों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ और अपनी प्रतिभा को निरंतर निखारें। याद रखें—जिस जीवन में सुर, लय और ताल का संतुलन होता है, वह जीवन भी आनंद, अनुशासन और सफलता से भर जाता है।

हम सभी संगीत को केवल एक कला नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व निर्माण और राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम बनाएँ।

दीपक कुमार
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

प्रधानाचार्य जी की कलम से

संस्कार, सृजन और स्व-विकास: भैया-बहिनों के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला विद्यालय केवल ज्ञान प्राप्त करने का स्थान नहीं, बल्कि संस्कार, सृजनशीलता और व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम पाठशाला भी है। यहाँ प्रत्येक भैया-बहिन को ऐसा वातावरण मिलता है, जहाँ वे केवल पढ़ना-लिखना ही नहीं सीखते, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाले मूल्यों को भी आत्मसात करते हैं। यही संस्कार उन्हें एक श्रेष्ठ विद्यार्थी, संवेदनशील नागरिक और आदर्श व्यक्तित्व बनने की प्रेरणा देते हैं।

संस्कार मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी पूँजी हैं। सत्य बोलना, बड़ों का सम्मान करना, अनुशासन का पालन करना, समय का सदुपयोग करना तथा सेवा और सहयोग की भावना रखना—ये गुण जीवन को ऊँचाइयों तक ले जाते हैं। जब भैया-बहिन इन मूल्यों को अपने व्यवहार में अपनाते हैं, तब उनका व्यक्तित्व स्वयं दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाता है।

सृजन नई सोच, कल्पना और नवाचार का परिचायक है। प्रत्येक बालक-बालिका में कोई न कोई विशेष प्रतिभा अवश्य होती है। चित्रकला, लेखन, संगीत, विज्ञान, हस्तकला, खेल अथवा सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से अपनी रचनात्मक क्षमता को विकसित करना उन्हें आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाता है। सृजनशीलता केवल कला तक सीमित नहीं, बल्कि समस्याओं का सकारात्मक समाधान खोजने की क्षमता भी है। इन्हीं दोनों आधारों पर स्व-विकास का निर्माण होता है। स्व-विकास का अर्थ है—प्रतिदिन स्वयं को पहले से बेहतर बनाने का सतत प्रयास। अच्छी पुस्तकों का अध्ययन, नियमित अभ्यास, समय का सदुपयोग, योग-व्यायाम, सकारात्मक सोच और आत्ममूल्यांकन जैसे छोटे-छोटे प्रयास जीवन में बड़े परिवर्तन लाते हैं। जब भैया-बहिन अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहते हैं, तो सफलता स्वयं उनके कदम चूमती है।

आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि अपने जीवन में श्रेष्ठ संस्कारों को अपनाएँगे, अपनी रचनात्मक प्रतिभा को निरंतर विकसित करेंगे और आत्मविकास की यात्रा को कभी नहीं रोकेंगे। यही गुण हमें ज्ञानवान, चरित्रवान और राष्ट्रभक्त नागरिक बनाएँगे तथा समाज और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में हमारी सार्थक भूमिका सुनिश्चित करेंगे।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है। इसे मनाने की शुरुआत वर्ष 1972 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और प्लास्टिक कचरे के प्रति लोगों को जागरूक करना है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि प्रकृति को नुकसान पहुँचाने से मानव स्वास्थ्य और हमारा भविष्य सीधे तौर पर खतरे में पड़ रहा है। आज पर्यावरण संरक्षण दुनिया की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन चुका है। आधुनिक युग में तरक्की के नाम पर हमने पर्यावरण को भारी नुकसान पहुँचाया है। अंधाधुंध वनों की कटाई, कल-कारखानों से निकलता जहरीला धुआँ और प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग हमारे पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर रहा है। हवा में बढ़ता प्रदूषण और नदियों का गंदा पानी इस बात का प्रमाण है कि हम प्रकृति के साथ कितना खिलवाड़ कर रहे हैं।

पर्यावरण का बिगड़ता संतुलन और जलवायु परिवर्तन:-

तापमान में लगातार वृद्धि, पिघलते ग्लेशियर और मौसम के बदलते चक्र इसी असंतुलन के परिणाम हैं। यदि हमने समय रहते अपने कदम नहीं रोके, तो आने वाले समय में हमें भयंकर प्राकृतिक आपदाओं और स्वच्छ पेयजल के संकट का सामना करना पड़ेगा।

पर्यावरण केवल पेड़-पौधों का नाम नहीं है, बल्कि यह हमारे और हमारे बच्चों के जीवन का आधार है।

हमारी जिम्मेदारी और समाधान:-

प्रकृति संरक्षण के लिए हमें अपनी आदतों में बदलाव लाना होगा। इसके लिए कुछ आसान कदम बहुत मददगार हो सकते हैं —

पेड़ लगाएँ:- वनों की कटाई रोकने के साथ-साथ पौधारोपण को जन आंदोलन बनाना होगा।

प्लास्टिक का बहिष्कार: सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग बंद करके कपड़े या जूट के थैलों का प्रयोग करें।

जल संरक्षण:- पानी को व्यर्थ न बहाएँ और वर्षा जल संचयन की आदत डालें।

ऊर्जा की बचत:- कमरे में कोई न हो तो लाइट और पंखे बंद कर दें तथा सौर ऊर्जा जैसे नवीकरणीय संसाधनों को अपनाएँ।

पर्यावरण को बचाना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सभी का कर्तव्य है। जब तक हर व्यक्ति व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास नहीं करेगा, तब तक बदलाव संभव नहीं है।

आइए, इस विश्व पर्यावरण दिवस पर हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपनी पृथ्वी को हरी-भरी, स्वच्छ और सुरक्षित बनाएँगे।

रचना शर्मा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

वायु शुद्धि यज्ञ

वायु हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। बिना वायु के कोई भी जीव जीवित नहीं रह सकता। शुद्ध वायु से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है और मन प्रसन्न रहता है। आज के समय में बढ़ते प्रदूषण के कारण वायु दूषित होती जा रही है। कारखानों का धुआँ, वाहनों से निकलने वाली गैसें, पेड़ों की कटाई और प्लास्टिक जलाने से वातावरण प्रदूषित हो रहा है। दूषित वायु के कारण मनुष्य अनेक बीमारियों का शिकार हो रहा है। इसलिए वायु को शुद्ध रखना बहुत आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति में वायु को शुद्ध रखने के लिए यज्ञ का विशेष महत्व बताया गया है। यज्ञ केवल धार्मिक कार्य नहीं है, बल्कि यह वातावरण को पवित्र और शुद्ध बनाने का एक उत्तम उपाय भी है। यज्ञ में घी, कपूर, चंदन, हवन सामग्री तथा विभिन्न औषधियों का प्रयोग किया जाता है। जब ये सामग्री अग्नि में डाली जाती हैं, तब उनसे निकलने वाला धुआँ वातावरण में फैलकर वायु को शुद्ध करने में सहायता करता है। इससे वातावरण में सुगंध फैलती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

प्राचीन समय में ऋषि-मुनि नियमित रूप से यज्ञ करते थे। उनका मानना था कि यज्ञ से प्रकृति संतुलित रहती है तथा वातावरण शुद्ध बना रहता है। आज विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि कुछ प्राकृतिक पदार्थों में वातावरण को शुद्ध करने की क्षमता होती है।

हमें केवल यज्ञ ही नहीं करना चाहिए, बल्कि पेड़-पौधे लगाकर, स्वच्छता बनाए रखकर और प्रदूषण कम करके भी वायु को शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे, तभी हमें शुद्ध वायु और स्वस्थ जीवन प्राप्त होगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण को स्वच्छ रखने में अपना योगदान दे।

प्रेरणा शर्मा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व रक्तदान दिवस

विश्व रक्तदान दिवस हर साल 14 जून को मनाया जाता है।इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य सुरक्षित रक्त और रक्त उत्पादों की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाना और स्वैच्छिक, अवैतनिक रक्तदाताओं को उनके जीवन रक्षक योगदान के लिए धन्यवाद देना है।

मुख्य विवरण

स्थापना:- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा वर्ष 2004 में इसकी शुरुआत की गई थी।

यह दिन क्यों चुना गया:- 14 जून प्रसिद्ध वैज्ञानिक कार्ल लैंडस्टीनर की जयंती है। उन्होंने ही ABO रक्त समूह प्रणाली की खोज की थी, जिसके लिए उन्हें चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार भी मिला था।

रक्तदान के लाभ और पात्रता:-

जीवन की रक्षा:- आपका एक यूनिट रक्त कई लोगों की जान बचा सकता है, जैसे दुर्घटना के शिकार लोगों, प्रसव के दौरान महिलाओं और थैलेसीमिया/कैंसर के मरीजों के लिए।

पात्रता:- सामान्यतः 18 से 65 वर्ष के बीच के वयस्क, जिनका वजन कम से कम 50 किलोग्राम हो और जो उत्तम स्वास्थ्य में हों, रक्तदान कर सकते हैं।

वर्तमान परिदृश्य और संकल्प:-

आज भी कई जगहों पर सुरक्षित रक्त की कमी एक बड़ी चुनौती है। इसलिए, स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी स्तरों पर कई शिविर लगाए जाते हैं। इस दिवस पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम बिना किसी डर या मिथक के स्वेच्छा से रक्तदान करेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे।

अनुपम (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व योग दिवस

विश्व योग दिवस प्रत्येक वर्ष 21 जून को पूरे विश्व में उत्साह और जागरूकता के साथ मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य लोगों को योग के महत्व के बारे में बताना और उन्हें स्वस्थ जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करना है। भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2014 में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया था। इसके बाद वर्ष 2015 में पहली बार पूरे विश्व में योग दिवस मनाया गया। आज यह दिवस अनेक देशों में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। योग भारत की प्राचीन संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा को संतुलित रखने की एक जीवन पद्धति है। योग शब्द का अर्थ है — "जोड़ना"। योग हमें मानसिक शांति, आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। नियमित योग करने से शरीर स्वस्थ रहता है और मन एकाग्र होता है।

आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में लोगों को तनाव, चिंता और अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में योग बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। योग करने से शरीर लचीला बनता है, रक्त संचार सही रहता है और रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। प्राणायाम और ध्यान करने से मन शांत रहता है तथा क्रोध और चिंता कम होती है। यही कारण है कि डॉक्टर और स्वास्थ्य विशेषज्ञ भी लोगों को प्रतिदिन योग करने की सलाह देते हैं। विश्व योग दिवस के अवसर पर विद्यालयों, कॉलेजों, कार्यालयों और विभिन्न संस्थानों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लोग पार्कों और खुले मैदानों में एकत्र होकर सामूहिक योगाभ्यास करते हैं। छात्र-छात्राएँ विभिन्न योगासन, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास करते हैं। कई स्थानों पर योग प्रतियोगिताएँ, रैलियाँ और जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को योग के लाभों के बारे में जानकारी दी जाती है। बच्चों के लिए योग बहुत उपयोगी है। योग करने से उनकी एकाग्रता बढ़ती है, स्मरण शक्ति मजबूत होती है और शरीर स्वस्थ रहता है। नियमित योग करने वाले बच्चे पढ़ाई और खेल दोनों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं। योग बच्चों में अनुशासन, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच विकसित करता है।

योग केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में लोकप्रिय हो चुका है। अनेक विदेशी लोग भी योग को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहे हैं। यह भारत के लिए गर्व की बात है कि हमारी प्राचीन परंपरा आज पूरे विश्व को स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा दे रही है। हमें प्रतिदिन कुछ समय योग के लिए अवश्य निकालना चाहिए। यदि हम नियमित रूप से योग करें, तो हम शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं। योग हमें स्वस्थ, सुखी और संतुलित जीवन जीने की राह दिखाता है।

"करो योग, रहो निरोग।"

प्रीति शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

बंकिमचंद्र जयंती

बंकिम चंद्र जयंती महान साहित्यकार और राष्ट्रभक्त बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की स्मृति में मनाई जाती है। उनका जन्म 27 जून 1838 को पश्चिम बंगाल में हुआ था। वे भारतीय साहित्य के ऐसे लेखक थे जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों के मन में देशभक्ति और समाज सुधार की भावना जगाई। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय केवल एक प्रसिद्ध लेखक ही नहीं, बल्कि एक योग्य प्रशासक और महान विचारक भी थे। उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद सरकारी सेवा में कार्य किया, लेकिन उनका मन साहित्य और समाज सेवा में अधिक लगता था। उन्होंने कई प्रसिद्ध उपन्यास लिखे जिनमें आनंदमठ, दुर्गेशनंदिनी, देवी चौधरानी और कपालकुंडला विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, नैतिकता और देशप्रेम की झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान " वंदे मातरम् " गीत है। यह गीत उनके प्रसिद्ध उपन्यास आनंदमठ से लिया गया है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान यह गीत देशवासियों के लिए प्रेरणा और साहस का स्रोत बना। इस गीत ने लोगों में मातृभूमि के प्रति प्रेम और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की भावना को मजबूत किया।

बंकिम चंद्र जयंती के अवसर पर विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विभिन्न संस्थाओं में भाषण, लेख, कविता पाठ और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विद्यार्थी उनके जीवन और साहित्य से प्रेरणा लेते हैं तथा उनके योगदान को याद करते हैं।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का निधन 8 अप्रैल 1894 को हुआ, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी लोगों के हृदय में जीवित हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र को दिशा देने का माध्यम भी है। हमें उनके आदर्शों और देशभक्ति की भावना को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

अभिलाषा पाण्डेय (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

हिन्दू साम्राज्य दिवस

हिन्दू साम्राज्य दिवस उत्सव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा मनाया जाने वाला एक विशिष्ट उत्सव है जो हिंदू समाज को एक अत्यंत गौरवशाली दिवस का स्मरण कराता है। यह उत्सव ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी के दिन मनाया जाता है। इस तिथि को ही लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व हिन्दू राष्ट्र के पुनरुत्थान का एक महत्वपूर्ण प्रयास संपन्न हुआ था। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी के दिन ही महाराज शिवाजी के राज्याभिषेक के साथ ही भारत में एक नये युग का सूत्रपात हुआ था। छत्रपति शिवाजी महाराज के समय भारत मुगल आक्रांताओं के क्रूर अत्याचारों से त्रस्त था और देश में निराशा का घोर अंधकार छाया हुआ था ।छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी माता जीजाबाई के सानिध्य में स्वराज का जो संकल्प लिया था उसके लिए वह बिना विचलित हुए अपना कर्म करते रहे और अंततः लक्ष्य तक पहुंचकर हिन्दू पद पादशाही की घोषणा की। जिस प्रकार त्रेतायुग में प्रभु श्रीराम ने लंका विजय के पूर्व समाज के हर वर्ग को एकजुट किया और अपनी सेना खड़ी की ठीक उसी प्रकार महाराज शिवाजी ने भी अपना लक्ष्य साधा। आज से 300 वर्ष पूर्व जब शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ था उस समय हिन्दू समाज के लिए विपरीतता की पराकाष्ठा थी और उस समय के विद्वान शूरवीरों के मन में यह विचार भी नहीं आता था कि इस परिस्थिति को बदला जा सकता है। महाराज शिवाजी के राज्याभिषेक के पूर्व तक मुगल शासकों द्वारा हिन्दू समाज पर घनघोर अत्याचार हो रहे थे। मंदिरों और विद्या के केंद्रों का विध्वंस हो रहा था। तलवार के बल पर आम जन का धर्मांतरण किया जा रहा था। हिन्दुओं से जजिया कर वसूला जा रहा था। हिन्दू बहन -बेटियों की अस्मिता नष्ट की जा रही थी । शिवाजी के शासनकाल में हिन्दुओं की घर वापसी का व्यापक अभियान भी चलाया गया क्योंकि उस समय मुगल शासकों के अत्याचारों के भय के कारण भारी संख्या में हिन्दू समाज ने इस्लाम को अपना लिया था। यह हिन्दू समाज के भविष्य व अस्तित्व के लिए बड़ा खतरा बना हुआ था। छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन का हर पक्ष हमारा मार्गदर्शन करता है ।शिवाजी महाराज का चरित्र, नीति कुशलता और उद्देश्य की पवित्रता की आज हमारे समाज को आवश्यकता है।शिवाजी के राजनैतिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं।शिवाजी इसलिए हमारे आदर्श हैं क्योकि उन्होंने शून्य से सृष्टि का निर्माण किया। शिवाजी का नेतृत्व विजीगीषु और प्रतिकूलता को पराजित करने वाला था। शिवाजी में परिस्थितियों को समझने का चातुर्य भी था और दूरदृष्टि भी। छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन अतिभव्य और आदर्श है। नई पीढ़ी को शिवाजी के जीवन का अध्ययन करना चाहिए ओर उनके गुणों अपनाने का प्रयास भी करना चाहिए। छत्रपति शिवाजी की अमर विजयी गाथा को जन -जन तक पहुंचाने के लिए ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिन्दू साम्राज्य दिवस उत्सव मनाता है। वर्तमान समय में हिन्दू साम्राज्य दिवसोत्सव मनाना इसलिए भी प्रासंगिक है क्योकि छत्रपति शिवाजी महाराज के समय की परिस्थिति और वर्तमान परिस्थिति में काफी समानता है। उस समय भी हिन्दू समाज पर चारों ओर संकट के बादल थे और वह अपना आत्मविश्वास खो बैठा था। छत्रपति शिवाजी महाराज के अदम्य साहसिक प्रयासों से वह खोया हुआ आत्मविश्वास वापस आ पाया था।

प्रेरणा शर्मा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

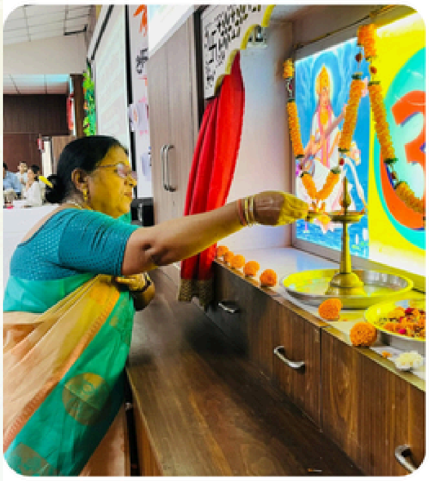

क्षेत्रीय शिशु वाटिका
प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

विद्या भारती
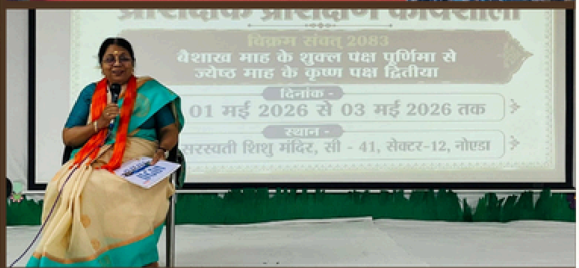
विक्रम संवत् 2083
बैशाख माह के शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से
ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष द्वितीया
दिनांक -
01 मई 2026 से 03 मई 2026 तक
स्थान -
सरस्वती शिशु मंदिर, सी - 41, सेक्टर-12, नोएडा

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

SITTING
LAUGHING

विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विक्रम संवत् 2083 के वैशाख शुक्ल पूर्णिमा से ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया (01–03 मई 2026) तक आयोजित यह त्रि-दिवसीय क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला संस्कारयुक्त, गुणवत्तापूर्ण एवं बाल-केंद्रित शिक्षा के सशक्त संकल्प का प्रेरक संगम है।

यह कार्यशाला प्रशिक्षकों के व्यक्तित्व, शिक्षण-कौशल तथा नवाचारपूर्ण शिक्षण पद्धतियों को समृद्ध कर राष्ट्र निर्माण के महान उद्देश्य को नई ऊर्जा प्रदान करना है।

रवींद्रनाथ टैगोर जयंती

वंदना सत्र में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर जी की जयंती श्रद्धा, सम्मान एवं कृतज्ञता के साथ मनाई गई।

उनका साहित्य, चिंतन और राष्ट्रभक्ति आज भी प्रत्येक पीढ़ी के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत है।"

मातृ दिवस कला एवं खेल प्रतियोगिता

दिनांक- 08/05/2026 दिन- शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा प्रभात व पंचम के भैया-बहनों हेतु Inner Wheel Club of Noida Star की ओर से Sports एवं Mother’s Day Drawing Competition का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन सिंह जी (प्रेसिडेंट), श्रीमती इंदिरा मावी शर्मा जी (वाइस प्रेसिडेंट), श्रीमती अनुभा उपाध्याय जी, श्री प्रदीप भारद्वाज जी, श्री सुरेंद्र महाजन जी एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन कर किया गया। इस अवसर पर कक्षा प्रभात के भैया-बहिनों ने 6 विभिन्न खेलों Lemon race, Banana race, Ring and ball race, Frog race, Balloon race and musical chair game का उत्साहपूर्वक प्रदर्शन किया। खेल प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले भैया-बहिनों को क्लब की ओर से पुरस्कृत किया गया। साथ ही कक्षा पंचम में आयोजित Mother’s Day Drawing Competition में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले भैया-बहिनों को भी सम्मानित किया गया।

रेडक्रॉस डे

विश्व रेड क्रॉस दिवस के अवसर पर विद्यालय में मानवता, सेवा और करुणा के मूल्यों को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने प्रथम उपचार (First Aid) के प्रति जागरूकता प्राप्त की। यह आयोजन विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सेवा-भाव विकसित करने की दिशा में प्रेरणादायक रहा।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

दिनांक- 11/05/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में यथार्थ हॉस्पिटल के सहयोग से भैया-बहिनों के लिए चार- दिवसीय स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का शुभारंभ अत्यंत गरिमामय वातावरण में किया गया। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है, इसी उद्देश्य को लेकर आयोजित इस शिविर ने विद्यालय परिवार में स्वास्थ्य जागरूकता का प्रेरणादायी संदेश प्रदान किया। शिविर के प्रथम दिवस पर डॉक्टर की टीम एवं माननीय अतिथिगण- श्रीमान प्रदीप गुप्ता जी (प्रांतीय संगठन मंत्री, विद्या भारती मेरठ प्रांत), श्रीमान शिव कुमार वर्मा जी (अध्यक्ष, शिशु शिक्षा समिति, मेरठ प्रांत), श्री साकेश शर्मा जी (उपाध्यक्ष शिशु शिक्षा समिति, मेरठ प्रांत), श्री प्रदीप भारद्वाज जी (मंत्री शिशु शिक्षा समिति, विद्यालय अध्यक्ष), श्री राजकुमार कलरा (कोषाध्यक्ष शिशु शिक्षा समिति, मेरठ प्रांत), श्री मदन पाल जी (प्रदेश निरीक्षक शिशु शिक्षा समिति, मेरठ प्रांत), श्री सुरेश चौहान जी (मेरठ संभाग निरीक्षक), श्री राधे श्याम जी (संभाग निरीक्षक गाजियाबाद विभाग), श्री देवेश जी (मुरादाबाद संभाग), श्री प्रकाश वीर जी (अभिलेखागार प्रमुख मेरठ प्रांत), श्री देवेंद्र शर्मा जी (विद्यालय प्रधानाचार्य) द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन कर शिविर का शुभारंभ किया गया।

आचार्य-अभिभावक गोष्ठी

आचार्य–अभिभावक गोष्ठी शिक्षा एवं संस्कार के समन्वित विकास को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक सार्थक एवं प्रेरणादायी पहल सिद्ध हुई। इस अवसर पर आचार्यों एवं अभिभावकों के मध्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, शैक्षिक प्रगति, अध्ययन-अभिरुचि, अनुशासन तथा नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन पर विस्तृत एवं सकारात्मक संवाद हुआ। अभिभावकों ने अपने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार साझा किए, जबकि आचार्यों ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

अंग्रेजी संभाषण

दिनांक -14/05/2026 दिन- गुरुवार को सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा के वंदना सत्र में दीपक जी, धर्मेंद्र जी व English communication में प्रशिक्षण प्राप्त आचार्यों का विद्यालय भ्रमण हेतु आगमन हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी व आए अतिथियों ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया तथा भैया-बहिनों से वार्ता की।

तरण-ताल क्रियाकलाप

सरस्वती शिशु मंदिर में नर्सरी से यूकेजी तक के हमारे नन्हे-मुन्ने बच्चों ने बड़े आनंद और उत्साह के साथ एक मनोरंजक स्विमिंग पूल गतिविधि का आनंद लिया। चंचल जल खेलों के माध्यम से, बच्चों ने पानी में संतुलन, तैरना और सुरक्षित आवाजाही जैसे बुनियादी जल कौशल सीखे। यह गतिविधि पंचतत्व की अवधारणा से जुड़ी थी, जिससे बच्चों को हमारे जीवन में जल तत्व के महत्व को समझने में मदद मिली। खुशनुमा माहौल ने आत्मविश्वास पैदा करते हुए सीखने को आनंददायक बना दिया

समर कैंप उद्घाटन

दिनांक 25/05/2026 से 05/06/2026 तक सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में ग्रीष्मकालीन अवकाश को आनंदमय एवं ज्ञानवर्धक बनाने हेतु विशेष “समर कैंप” का आयोजन किया गया है। मुख्य अतिथि श्रीमान प्रकाश वीर जी, नुमल जी का पटका पहन कर स्वागत किया गया। इस समर कैंप का उद्देश्य भैया-बहिनों के सर्वांगीण विकास के साथ उनकी रचनात्मकता, आत्मविश्वास एवं प्रतिभा को निखारना है। समर कैंप में कराटे, स्विमिंग, घोष, शतरंज, संगीत, आर्ट एंड क्राफ्ट तथा बैडमिंटन जैसी रोचक एवं उपयोगी गतिविधियाँ आयोजित की गई। इस शिविर में विद्यार्थियों को खेल-खेल में सीखने, नई कलाओं को अपनाने तथा अनुशासन एवं टीम भावना विकसित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

विद्यालय परिसर में उत्साह, उमंग और रचनात्मकता से भरपूर इस आयोजन को लेकर भैया-बहिनों में विशेष उत्सुकता देखी गई।